आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 17-10-14

अपने सत्य स्वरूप की पहचान देकर, हमें एक की ही याद सिखलाकर पुण्य-आत्मा बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - एक बाप की याद में रहना ही अव्यभिचारी याद है, इस याद से ही तुम्हारे जन्मो-जन्म के पाप कट जायेंगे और तुम पावन आत्मा बन जायेंगे.

बाबा की हर मुरली में बाबा हमें दो मुख्य बातों का अभ्यास कराते है - १. स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करों. २. बाप के वर्से को याद करों.

बाबा की आज की मुरली से इन दोनों बातों का अभ्यास कराने वाले महावाक्यों को निकाल कर देही-अभिमानी अवस्था बनाने का और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का पुरुषार्थ करेंगे.

१. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करने का अभ्यास जिसे मनमनाभव भी कहते हैं.

- बाबा कहते हैं एक होती है व्यभिचारी याद, दूसरी होती है अव्यभिचारी याद. तुम सबकी है अव्यभिचारी याद. किस की याद है? एक बाप की. बाप को याद करते-करते पाप कट जायेंगे और तुम वहॉ पहुँच जायेंगे.

- पावन बनकर फिर नई दुनिया में जाना है. आत्माओं को जाना है. आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा सब कर्म करती है ना. बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो.

- भक्ति भी पहले-पहले हमने ऊंच ते ऊंच शिवबाबा की ही की थी. वही सर्व को सद्गति देने वाला रचता बाप है. उनसे ही हम आत्माओं को बेहद का वर्सा मिलता है.

- बाबा कहते है यहॉ तो तुम सब आत्माये हो. सब आत्माओं का बाप एक है. सब आत्माये भाई-भाई हैं. सबको बाप से वर्सा लेने का हक है.

- हम आत्माये अविनाशी है, तो हमारे में पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ हैं. वह कभी विनाश नहीं हो सकता हैं. अभी जो है वही रुप, काल, देश ५००० वर्ष बाद फिर से होगा.

- हम सब आत्माये इस अविनाशी ड्रामा में पार्ट बजा रही हैं. सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ हैं. देही-अभिमानी हो, साक्षी हो इस बेहद के खेल को देखना हैं.

- ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप ज्ञान-सागर है. बाप आकर हम बच्चों को अर्थात आत्माओं को पढ़ाते है. वह हमारा बाबा भी है, टीचर भी है फिर सतगुरु भी बनते है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर वर्से को याद करो या स्वदर्शन चक्रधारी बनने का अभ्यास करों.

- बाबा कहते है अब तुम जानते हो इस दुनिया से सब आत्माओं को वापस अपने घर जाना ही हैं. जो भी मनुष्य मात्र हैं, सबका पार्ट अब पुरा होता है. फिर बाप आकर तुम्हें पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जाते हैं, पार ले जाते हैं.

- मूलवतन से लेकर सारी दुनिया का नक्शा हमारी बुद्धि में हैं. हम आत्मायें स्वीटधाम, शांतिधाम की निवासी हैं. जब हम सतयुगी दुनिया में है तो बाकी सभी आत्मायें शान्तिधाम में रहती हैं.

- हम सब आत्मायें रहती है, ऊपर निराकारी दुनिया में. फिर आती है, नम्बरवार पार्ट बजाने. पहले-पहले नम्बर शुरू होता है देवताओं का. सतयुग में पहले चलती है सूर्यवंशी डियनास्टी, फिर है चंद्रवंशी डियनास्टी.

- हम सब आत्माये सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो प्रकृति भी सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आती ही हैं.

- हम आत्मायें पहले-पहले अपने घर स्वीट होम में जाकर फिर नई दुनिया सतयुग में आयेंगे. अभी यह तो पुरानी दुनिया है. ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही हैं.

ॐ शांति.